आलोचनात्मक चिंतन में नाकाम पाठ्यपुस्तकें

निवेदिता विजय बेदादुर

भारत में स्कूली शिक्षा पर पाठ्यपुस्तकों का वर्चस्व स्थापित है। पाठ्यपुस्तक संस्कृति की भारतीय स्कूली शिक्षा पर मजबूत पकड़ है व शिक्षक के काम को भी इसने जबरदस्त तरीके से अपने वश में कर रखा है। शिक्षाविद भी उन देशों का उदाहरण देकर इस बात को दोहराते रहे हैं, जिन्होंने पाठ्यपुस्तक संस्कृति विकसित करने की बजाए शिक्षकों के सशक्तिकरण का रास्ता चुना, ताकि वे कक्षा में पाठ्यपुस्तकों के बजाए अन्य संसाधनों का उपयोग कर सकें, मगर हम उस तरह की समग्र व्यवस्था से अभी दूर हैं। Position Paper National Focus Group on Teaching of English, P. 13-14)। पाठ्यपुस्तकों को लिखे जाते समय बहुत स्वाभाविक है कि उन पर लेखक के विचारों का रंग चढ़ जाए। पाठ्यपुस्तकें सांस्कृतिक कलारूप होती हैं और उनमें देश के मूल्य व संस्कृति विद्यमान रहते है। किन्तु हमारे जैसे विविधता भरे देश में उन पर अक्सर प्रभुत्वशाली समूहों के मूल्यों का रंग चढ़ा होता है। उनकी विषयवस्तु 'कुछ खास' प्रकार के मूल्यों को जीवन दर्शन के रूप में पेश कर रही होती है। यह बात शिक्षा के मूल मकसद के खिलाफ जाती है क्योंकि शिक्षा तो निर्णय लेने, अलोचनात्मक ढंग से विचार कर पाने तथा तार्किक व समावेशी बनने जैसी क्षमताओं का विकास करने वाली होती है।

जहां तक भाषा की पाठ्यपुस्तकों का सवाल है यह बात बहुत महत्व की हो जाती है। चूंकि भाषा एक अनुभव है और इसमें हम अपने अनुभवों को सहेजते हैं इसलिए हमें इस बात का विश्लेषण करने की जरूरत है कि पाठ्यपुस्तकें छात्रों द्वारा निर्मित किए जा रहे अर्थ पर किस तरह का असर डालती हैं और पाठ्यपुस्तकों में मौजूद नज़रिए से इसका किस प्रकार का रिश्ता बनता है। क्या यह आलोचनात्मक चिंतन, तर्क व निर्णय लेने की क्षमताओं के विकास को संभव बनाती हैं (NCF 2005; P. 13)? यह और भी जरूरी इसलिए हो जाता है क्योंकि पाठ्यपुस्तक को लेकर शिक्षकों का नज़रिया यह है कि इसमें लिखे शब्द ही सत्य हैं, इसके परे कुछ भी नहीं है!

दर्शन व पद्धति

राजस्थान की अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तकों के 'प्राक्कथन' में इस बात का उल्लेख है कि वे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005) पर आधारित हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा सीखने को लेकर सामाजिक-रचनावादी नज़रिए का समर्थन करती है जिसका आधार भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान व तंत्रिका तंत्र (न्यूरोलोजिकल) के क्षेत्रों में हुए शोध हैं। यह नज़रिया बच्चे को ऐसे सक्रिय सीखने वाले के रूप में देखता है जो अर्थ निर्माण के लिए अपने आस-पास की दुनिया का अन्वेषण कर रहा होता है और चार साल का होते-होते भाषाई दृष्टि से एक पूर्ण वयस्क बन चुका होता है (NCF 2005; P. 6, 12)। बच्चा भाषा व अवधारणात्मक समझ के पूर्वज्ञान के साथ स्कूल में आता है और शिक्षक को इसी ज्ञान को आधार बनाकर आगे सिखाने की जरूरत होती है। सामाजिक-रचनावादी (सोशियो-कंस्ट्रक्टविस्ट) नजरिए

का मानना है कि भाषिक निपुणता समूहों में सीखते हुए व सांस्कृतिक उपकरणों के जरिए अर्जित की जा सकती है तथा ऐसा करने के लिए एक ऐसे समृद्ध वातावरण की जरूरत होती है जिसमें भाषा अर्जन के लिए बहुत तरह के मौके हों और विभिन्न नजरियों को जांचने व तर्कपूर्ण निर्णय लेने के मौके हों। इस तरह देखें तो सामाजिक-रचनावादी (सोशियो-कंस्ट्रक्टविस्ट) नजरिया समावेशी है। हालांकि सरसरी तौर पर की गई पड़ताल से भी यह पता चल जाएगा कि यह पाठ्यपुस्तकें NCF 2005 के दर्शन व नजरिए को सिर के बल खड़ा कर देती हैं। वे सीखने को प्रोत्साहन (या उद्दीपन) की प्रतिक्रिया में हुई घटना मानने वाले युग में लौट गई हैं तथा रट्टामार तरीकों व सीखने को छोटे-छोटे अंशों में तोड़ने को बढ़ावा देने वाली हैं। वे शिक्षण को अभ्यास व कवायद के जरिए होने वाले व्यवहार में बदलाव के रूप में देखती हैं। वे बच्चे को खाली स्लेट के तौर पर देखती हैं तथा उसे बोलने, लिखने व व्यवहार करने के सही तरीके सिखाना जरूरी मानती हैं। भाषा सीखना संप्रेषण के उद्देश्य से प्राप्त किए जाने वाले कुछ कौशल मात्र को हासिल करना भर रह जाता है।

प्राक्कथन

क्या उद्देश्यों को निचले स्तर पर ले जाना इसका जवाब हो सकता है?

प्राक्कथन में राज्य में आरंभिक शिक्षा के स्तर पर अंग्रेजी सिखाने के पीछे का तर्क दिया गया है, उसमें कहा गया है कि अंग्रेजी हमारी आम बोल-चाल की भाषा है। पाठ्यपुस्तकें छात्रों को अंग्रेजी सीखने से संबंधित सभी क्षेत्रों में सक्षम बनाती हैं। इन क्षेत्रों को इस प्रकार व्याख्यायित किया गया है - सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना। किन्तु NCF 2005 द्वितीय भाषा सीखने के उद्देश्यों को दोहरे स्तरों पर व्याख्यायित करता है। पहला स्वाभाविक भाषा की तरह प्रवीणता हासिल करना और दूसरा अमूर्त स्तर पर विचार कर पाने व ज्ञान हासिल कर पाने के साधन के तौर पर। NCF इससे आगे बढ़कर यह भी कहता है कि भाषा सब कुछ सीखने का स्रोत है, यह समझ विकसित करने व ज्ञान रचने का माध्यम है (NCF 2005, P. 39)। अगर ज्यादातर विश्वविद्यायलयों में शिक्षा का माध्यम रहने वाली अंग्रेजी सहित सभी भाषाएं सीखने का उद्देश्य यह है तो फिर क्या अपने उद्देश्यों को इतने निचले स्तर पर तय करना उचित है कि उनसे भाषा की केवल आधारभूत क्षमताएं हासिल की जा सकें ताकि उसका इस्तेमाल आम बोल-चाल में किया जा सके? यह राज्य के पाठ्यपुस्तक मंडल द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें हैं और इन्हें वंचित समुदायों के बच्चे पढ़ते हैं, यह तथ्य उच्च शिक्षा व आर्थिक सशक्तिकरण हासिल करने की ख्वाहिश रखने वाले लोगों के संदर्भ में समान उपलब्धता के सवाल को क्या और भी विचारणीय नहीं बना देता?

पाठ्यपुस्तकों में उजागर होतीं रूढ़िगत मान्यताएंः

बच्चों व बचपन को लेकर मान्यताएं

बच्चों को अपूर्ण वयस्क माना गया है। वयस्कों की यह जिम्मेदारी है कि उन्हें नैतिकता सिखाएं। ज्यादातर पाठ बच्चों को सीधे-सीधे नैतिकता विषयक बातें सिखाते हैं जैसा कि नीचे दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट होता हैः

बच्चों को पानी बर्बाद नहीं करना चाहिए, उन्हें साफ-सुथरा रहना चाहिए, उन्हें दूसरों की मदद करनी चाहिए आदि। अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तक के उद्देश्य के बारे में NCF 2005 में कहा गया है कि इसे भाषा सीखने-सिखाने की एक संदर्भ पुस्तिका के रूप में होना चाहिए (Position Paper for English, page 13)। भाषा की पाठ्यपुस्तक सरकारी कार्यक्रमों की प्रचार सामग्री नहीं हो सकती। इसे भिन्न-भिन्न शैलियों, लेखों, विभिन्न परिस्थितियों में भाषा के उपयोगों आदि का अनुभव देने की जरूरत होती है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं- स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान, सुकन्या समृद्धि, आरआईई (शिक्षा का अधिकार कानून) तथा योग। इनके संदर्भ में उदाहरणों को देखा जा सकता हैः

Class 3 Page 38 -39 Swatch Bharat Abhiyan, Page 78 Little Pride, Page 82 Save the Girl Child
Class 4 Page 20 CWSN, Page 21 A Brave Tribal Girl
Class 5 Page 7 Let's Learn Pranayam, Pages 26-28 School is a Temple.

Class 6 Smart Village 17-18
Class 7 Page 9- 10 My Dream School (RTE)
Class 8: Pages 27 -28 Life at KGBV, page 31 Long Live Ladli

अगर पाठ्यपुस्तक को जागरूकता बढ़ाने की संदर्भ सामग्री के तौर पर तैयार किया जाता है तब भी इस जागरूकता को ऐसे सवालों के जरिए पैदा किया जाना चाहिए जो बच्चे को अपने परिवेश को आलोचनात्मक ढंग से देखने में मदद करें और उसे यह तय करने में मदद करें कि उसके लिए कौन सी योजनाएं बेहतर हैं। आलोचनात्मक चिंतन व संवाद ही वह तरीका है जिसके जरिए भाषा सीखी जाती है ओर विचारों को धार दी जाती है। इन पाठ्यपुस्तकों में ऐसी किसी चर्चा के लिए बमुश्किल ही कोई जगह है। हम नीचे दिए उदाहरण से इसे समझ सकते हैंः

एक मां अपने बच्चे को लिखती है...

People like us (note the irony of marginalisation) are really fortunate that such type of education with hostel facility is provided to the marginalised section of society by the government free of cost. This is really a dream come true opportunity for people like us (note the repetition). The good quality of food and clothes ensured by them is also a great relief… Impressed by this scheme I am going to popularize this concept among all parents of girls in and around our village. (सच में हमारे जैसे लोग (वंचना की विडंबना पर ध्यान दें) भाग्यशाली हैं कि सरकार द्वारा समाज के वंचित तबके के लिए इस तरह की शिक्षा आवासीय सुविधा के साथ मुफ्त में उपलब्ध करवाई जाती है। यह हमारे जैसे लोगों (इस दोहराव पर ध्यान दें) के लिए तो सपना सच होने जैसा है। उनके द्वारा अच्छी गुणवत्ता का भोजना व कपड़े उपलब्ध करवाना एक राहत की बात है... इस योजना से मैं इतनी प्रभावित हुई हूं कि अपने गांव व आस-पास की लड़कियों के माता-पिता के बीच इसे प्रचारित करने वाली हूं।) (Life At KGBV Class VIII, pages 27-28.)

वास्तविक जीवन की दृष्टि से किसी मां का ऐसी बात कहना और ऐसी किताबी भाषा का प्रयोग अति नाटकीय लगता है जो साफ़ तौर पर सरकारी योजनाओं का प्रचार ही नज़र आता है। एक पाठ्यपुस्तक का उपयोग सरकारी योजनाओं के प्रचार के लिए करना कहां तक जायज़ है। इसके अलावा, ये अंश सुविधा और सुविधा विहीन लोगों की दो पृथक दुनिया होने की धारणा को भी पुष्ट करता है और उन्हें हम और वे की श्रेणियों में विभाजित होता हुआ दिखाता है। दरअसल यह वंचना से दबी-कुचली प्रजा द्वारा राज्य रूपी सत्ता पर अपने अस्तित्व को बचाए रखने की निर्भरता का विद्रूप चित्रण प्रस्तुत करता है। यह विवरण राज्य की कल्याणकारी और जवाबदेह भूमिका को दरकिनार करते हुए उसे एक ऐसे कृपालु दाता के रूप में प्रस्तुत करता है जिसकी सत्तापरक इच्छा और अनिच्छा पर वंचित तबकों का भाग्य तय होता है। और मुफ्त शिक्षा की सुविधा उसे अपने भाग्यशाली होने का सुख देती है। इसे पढ़ना व्यापक दुनिया का सामना करने पर उस छठी कक्षा की लड़की को कितना आत्मविश्वास देगा? या उसके कंधे हमेशा ही 'हम लोगों' की शब्दावली का भार ढोते हुए राज्य सत्ता के रूप में शक्तिशाली वर्ग के रहम पर अपनी अस्मिता को बनाए रखने की मुश्किलों के विचार से डर और असुरक्षा का भाव पाले रखने को बाध्य होंगे।

सीखने-सिखाने को लेकर मान्यताएं

बच्चे सचेतन रूप से ज्ञान का निर्माण खुद करते हैं। उन्हें अनुभवों व चर्चा के जरिए अवधारणों के बारे में खुद अपने निर्णय लेने की जरूरत होती है (NCF 2005, P. 13)। 'बाल केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है कि बच्चों के अनुभवों, उनकी राय व सक्रिय भागीदारी को प्राथमिकता दी जाए। परम्परागत शिक्षण पद्धतियों का जोर बच्चों के समाजीकरण व ग्रहण करने संबंधी गुण पर रहता है। इसकी बजाए हमें उनकी सक्रियता व रचनात्मकता को विकसित करने की जरूरत होती है। अच्छे बच्चे की अवधारणा का जोर उन्हें शिक्षक का आज्ञापालक बनाने पर होता है, इसमें नैतिक चरित्र तथा ज्ञान की सत्ता के तौर पर शिक्षक की कही बातों को मानने पर बल होता है (NCF 2005, P. 13)।'

कक्षा तीन की किताबों में 15 पाठ हैं इनमें से 7 पाठ बच्चे को एक ऐसे प्राणी के तौर पर देखते हैं जो गलत काम करता रहता है, उसे सही व्यवहारों के हथौड़े से गढ़ते हुए नैतिकता व शिष्टाचार सिखाना है। नीचे कक्षा तीन की

किताब के पाठों से कुछ ऐसे उदारहण दिए जा रहे हैं जिनमें ऐसा किया जा रहा हैः

- Work while you work - teaching the child time management (बच्चों को समय प्रबंधन सिखाना)
- A Smile with a Blessing - helping others (दूसरों की मदद की सीख)
- Good Habits (अच्छी आदतों की सीख)
- Swach Bharat Abhiyan - cleanliness (स्वच्छता के बारे में)
- Traffic Lights - Road sense (सड़क पर चलने के नियमों के बारे में)
- Life Echoes - love and hatred (प्यार और नफरत के बारे में)
- Ant and the Hunter - gratitude (कृतज्ञता/आभार के बारे में)

कक्षा तीन की किताब में दिए अभ्यासों का जोर यह लिखवाने पर है कि कौनसा व्यवहार सही है और कौनसा गलत। पृष्ठ संख्या 32 व 33 इसके नमूने हैं। इन पर दिए निर्देश कहते है, 'चित्र देखकर सवाल पढ़ो और जवाब दो।'

- Don't play in the rain. No, I won't. (बारिश में मत खेलो। ठीक है, मैं नहीं खेलूंगा।)
- Don't tease animals. No, I won't. (जानवरों को तंग मत करो। ठीक है, मैं नहीं करूंगा।)
- Don't pluck flowers. No, I won't. (फूलों को मत तोड़ो। ठीक है, मैं नहीं तोडूंगा।)

क्या हम 'क्या करना ठीक है' यह बता देने मात्र से यह विचार करना सीख जाते हैं कि क्यों हमें यह करना चाहिए या क्यों वह करना चाहिए? उपदेश देने से और सही गलत बता देने से केवल व्यवहार के स्तर पर बदलाव आता है, क्या इससे हमारी सोच में भी बदलाव आता है? दूसरी बात कि क्या कक्षा तीन में अंग्रेजी सिखाने का उद्देश्य अच्छी आदतों का विकास करना है? स्वतंत्र अभिव्यक्ति, अपने मत (अस्वीकृत मत को भी) को जाहिर करने का अधिकार, चर्चा करना, विचार व तर्क करना जैसी चीजें एक विकसित होते बच्चे के लिए महत्वपूर्ण होती हैं (NCF 2005, P.13)।

भाषा सीखना कौशल विकसित करना है

प्राक्कथन व गतिविधियों में कहा गया है कि भाषा सीखना, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना व व्याकरण सीखना जैसे कुछ कौशलों को विकसित करने का मामला है। इसे सिखाने के लिए चित्रों व शब्दों के जरिए घोटा लगवाने व बारंबार अभ्यास करवाने की पद्धति का इस्तेमाल किया गया है। सीखने के लिए बच्चे को शिक्षक के पीछे दोहराने की जरूरत होती है, इसीलिए कक्षा 4 के बाद हर पाठ की गतिविधि 2 में बच्चे को शिक्षक के पीछे शब्द दोहराने का काम दिया गया है। जबकि थीम आधारित गतिविधियां बेहद कम हैं? NCF 2005 द्वारा सुझाई गई एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करने का मौका देने वाली, खेल व समूह में काम के मौके देने वाली गतिविधियां पाठ्यपुस्तकों में बहुत कम हैं (NCF 2005, P. 13)?

अंश से समग्र तक

यह किताबें यह भी मानती हैं कि बच्चा भाषा छोटे-छोटे अंशों से सीखना शुरू करता है और बाद में विस्तृत रूप में सीखता है। इसीलिए कक्षा एक की किताब के पाठों में वर्णमाला लिखना सीखने पर जोर दिया गया है व लिखना सीखने पर 45 पृष्ठ लगाए गए हैं यानी हर वर्ण के लिए एक पृष्ठ। छोटे, बड़े वर्ण व पैटर्न बनाने पर दिए काम को शामिल कर लें तो बच्चों को कक्षा एक की किताब में कुल 155 शब्दों का दोहरान करना है तथा इन शब्दों के बीच किसी तरह का कोई आपसी संबंध नहीं है सिवा इसके कि वे ए, बी, सी आदि वर्णों से शुरू होने वाले शब्द हैं। कक्षा एक की किताब में 15 कविताएं हैं किन्तु बच्चों में ध्वनि सजगता लाने के लिए कौन-कौनसी गतिविधियां करवाई जानी हैं इस संबंध में शिक्षक के लिए किसी प्रकार के निर्देश नहीं दिए गए हैं। बच्चे को वर्णमाला के इन 45 पृष्ठों को लिखने में मेहनत लगानी है और 155 शब्दों को रट्टा मार-मारकर याद करना है। इन शब्दों के साथ 50 चित्र भी दिए गए हैं! 'इनपुट रिच' वातावरण का अर्थ होता है कि बच्चे शब्दों को सार्थक तरीकों से सीखें (NCF 2005, P. 39)। यह सच में बोधगम्य इनपुट की बहुत ही अजीब व्याख्या है कि 15 कविताएं बिना कोई ऐसा निर्देश दिए डाल दी जाएं कि उनके साथ शिक्षक को क्या करना है।

कक्षा दो की शुरुआत पूरे टैक्स्ट के साथ होती है। यानी हम सूक्ष्म (वर्णमाला) से विस्तृत की ओर बढ़ रहे हैं। किन्तु यह NCF 2005 का उल्लंघन है जहां कहा गया है कि बच्चों को ऐसे 'इनपुट रिच' वातावरण की जरूरत होती है जिसमें संवाद का वातावरण हो और दिया जाने वाला 'इनपुट' समझ में आने वाला हो (NCF 2005, P. 39; Position Paper for English, P. 9)। कक्षा दो का कुछ भाग भी वर्णमाला रटने पर लगाया गया है और यह मान लिया गया है कि अब बच्चे शब्द व वाक्य लिख सकते हैं। इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है कि लेखन की शुरुआत करने से पहले बच्चे के पूर्वज्ञान व उसकी अपनी दुनिया को मौखिक भाषा के जरिए कक्षा का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इस पर भी ध्यान नहीं दिया गया है कि बच्चे का पूर्वज्ञान, उसकी रुचियां तथा समाज की वे सांस्कृतिक रस्सियां जिनके सहारे बच्चा पढ़ने-लिखने में शिक्षित होने के लिए अपने शुरुआती नन्हें-नन्हें कदम उठाता है उन्हें कक्षा प्रक्रियाओं का हिस्सा बनाए जाने की जरूरत होती है। यहां यह बात समझने की है कि पाठ्यपुस्तकों को बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ से जोड़ने की कवायद पाठ्यपुस्तक में राजस्थान के पर्यटन स्थलों पर पाठ रख देने की औपचारिकता निभा कर कर दी गई है जो NCF में इस विषयक की गई अनुशंसा की पूर्ति नहीं करती।

Class II : Our Lovely Rajasthan, Sariska: The Tiger Reserve
Class III : Charbhujanath Mandir
Class IV : Mangarh Dham
Class V : Chittorgarh

जैसा कि प्राक्कथन में वादा किया गया है कि इन थीमों में स्थानीय व वैश्विक मुद्दों को शामिल किया गया है। स्थानीयता के आस्वाद के लिए हमने राजस्थान की सबसे बेहतर चीजें डाली हैं किन्तु वैश्विक आस्वाद के लिए हम या तो काल्पनिक द्वीप रचते हैं या प्राचीन भारत की शरण लेते हैं। क्या वैश्विकता को केवल 'डिजिटलाइजेशन' व काल्पनिकता के सहारे ही प्रस्तुत किया जा सकता है?

पाठों का अनुपयुक्त कठिनाई स्तर

कक्षा एक के बाद कक्षा दो में शरुआत फिर लिखने से होती है और 6 पृष्ठ अक्षर पहचान तथा वर्ण व शब्द लिखने पर लगाए गए हैं। और उसके बाद हम स्वामी विवेकानन्द के पाठ पर छलांग लगा देते हैं जिसमें 7 वाक्यों में parliament, religions, represented, platform, culture व audience जैसे 6 मुश्किल व जटिल शब्द शामिल हैं। NCF 2005 द्वारा प्रामाणिक टैक्स्ट लिए जाने संबंधी दिए गए सुझाव की इस व्याख्या पर सिर्फ हैरानी ही जताई जा सकती है (NCF 2005, P. 39)! पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, इस अवस्था के बच्चों के लिए अमूर्त अवधारणा समझ पाना मुश्किल होता है।

वर्णमाला पद्धति

कक्षा तीन से कक्षा आठ तक ध्वनियों पर करवाया गया काम प्रचुर मात्रा में है। NCF 2005 कहता है कि शुरुआती सालों में बच्चों के आस-पास मौखित व लिखित भाषा का वातावरण का होना जरूरी होता है। संवाद संबंधी कामों तथा अंतःक्रिया आधारित रेडियो को ध्वनि सजगता विकसित करने व भाषा अर्जन की प्रक्रिया शुरू करने के साधन के तौर पर सुझाया गया है (Position Paper for English, P. 7; NCF 2005, P.39 Input rich communicational environments)। शुरुआती सालों में सिर झुकाए वर्णमाला लिखने की वजह से आत्मविश्वास में हुई कमी को बाद के सालों में ध्वनियों का कितना भी रट्टा लगाकर भरा नहीं जा सकता!

बच्चे की आवाज कहां है?

सुनने व बोलने जैसी कुशलताओं को रट्टा मार-मारकर सिखाया जाता है। छात्रों को शिक्षकों के पीछे-पीछे दोहराना है अथवा पढ़े गए वाक्यों को व्यक्तिगत रूप से पढ़ना है। कक्षा चार से दिए गए निम्न उदाहरणों का जायजा लें:

Lesson 1 Page 5 Activity III Recite a poem, Activity IV Fill in the blanks.
Lesson 2 Activity IV Pronounce the following words

Lesson 3 page 27 Activity IV Pronounce the following, listen to the rhyme and answer questions
Lesson 4 page 35 Activity 4 page 35, Speak out (repeat) words for
Lesson 5 Activity 4 Speak out after your teacher
Lesson 6 Activity 4 Read a poem and answer questions, speak out (repeat) rhyming words.
Lesson 7 Activity 4 Ask each student to speak (repeat by filling in the blanks) two sentences.
Lesson 8 The teacher will read out a paragraph and children will listen and answer questions

किसी भी भाषा को सीखने की प्रक्रिया में यह जरूरी होता है कि दिए जाने वाला 'इनपुट' बोधगम्य या समझ में आने वाला हो साथ-साथ 'आउटपुट' के मौके हों और वातावरण ऐसा हो जिसमें बच्चा सहज महसूस करे। जब बच्चे अपने साथियों के साथ व करवाई जाने वाली खास सामूहिक गतिविधियों में एक-दूसरे से बातचीत करते हैं तब इससे भयरहित वातावरण का निर्माण होता है जो भाषा अर्जन में मददगार होता है। सुनने व बोलने की कुशलताएं विकसित करने के लिए उक्त गतिविधियों का पूरा जोर दोहराने व अभ्यास पर है।

हर कक्षा में टैक्स्ट (पाठ) के बाद समझ को जांचने वाले सवाल (comprehension questions) दिए गए हैं। इनमें गतिविधि एक शामिल है। सभी कक्षाओं में इस गतिविधि एक के अंतर्गत दिए गए सभी सवाल तथ्यों की जांच करने वाले हैं तथा उनमें 'सही' जवाब का इशारा छुपा होता है। इन पाठ्यपुस्तकों में ज्यादातर सवाल केवल एक जवाब वाले हैं, एक से ज्यादा जवाबों वाले सवाल लगभग नहीं हैं। Position Paper, National Focus Group on Teaching of English व NCF 2005 स्पष्ट रूप से यह सुझाव देते हैं कि बच्चों को उनके विचार व्यक्त करने, उनकी रुचियों को जाहिर करने, उनकी पसंद-नापसंद को जाहिर करने व अपनी राय देने के मौके प्रचुर मात्रा में दिए जाने चाहिए (NCF 2005, P. 13)।

NCF 2005 कहता है, पारंपरिक पुस्तकों में बच्चा तभी बोलता है जब वह या तो शिक्षक के किसी सवाल का जवाब दे रहा है या शिक्षक की कही बात को दोहरा रहा है। उसके पास खुद कुछ करने के अवसर व पहल करने के मौके लगभग ना के बराबर होते हैं। इस नज़रिए को बदले जाने की जरूरत है (NCF 2005, P. 13)।

हम गतिविधि एक से लिए कुछ उदाहरणों पर नज़र डालते हैं:

1. Class III Page 13 What was the old woman carrying, Who helped the old lady stand? Where did Meera throw the banana peel? What did the old lady give to Meera?
2. Class IV page 13 What did Ram make for his project? Who took Prakash to hospital and why? Who helped Ram in joining the school? Why could not Prakash play the match? How did Prakash realise Ram's pain?
3. Class V page 13 Why does the poet say we are not afraid? Which line in the song tells you that the poet is not living peacefully in the present? How do you feel when you sing this song?
4. Class VI page 13 At last… This line is said by… Who gave advice to the son?
5. Class VII page 13 Which trees were being cut down by the royal people and why? Who was the supervisor of the team? Who lost their lives and why? How did Amritadevi protest? What did Maharaja Abhay Singh do when he came to know about the massacre?
6. Class VIII page 10 Where did the animals usually assemble? What did the animals do in their fun time? When did the animals show their anger? Who was Nivedita? How did the animals feel happy? Why did the cages look empty?

पाठों में दिए गए अधिकांश प्रश्न भी ऐसे हैं जो बच्चों को स्वयं विचार करने और उन विचारों की अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान नहीं करते क्योंकि वे तथ्यपरक हैं जिनके उत्तर पाठ्य सामग्री में ही मौजूद हैं।

रूढ़ छवियां या 'स्टीरियोटाइप्स'

पाठ्यपुस्तकें एक खास नजरिए वाली रूढ़ छवियों या 'स्टीरियोटाइप्स' को ही और अधिक स्थापित करती हैं:

1. कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 64 पर दी गई गतिविधि 4 में दिए गए इस अभ्यास पर एक नजर डालें

I was doing my homework. My mother ____ (cook) food. My sister ____ (play). My father _____ watch TV. My grandmother ____ (sing) hymns. Our servant ____ arranging things in the drawers.

2. पाठ्यपुस्तकों की कहानियां कहती हैं कि आदिवासी व गांव के लोग आत्म-बलिदान करने वाले होते हैं। पुस्तकों में आदिवासियों व वंचितों पर तीन पाठ हैं और तीनों ही पाठों में आदियावासियों व उनके बच्चों से बलिदान करवाया गया है, उन्हें धनी व सत्तावान लोगों के लिए अपनी जान जोखिम में डालते बताया गया है। उदारहण के लिए:

Class VIII: The Brave Lady of Rajasthan (who sacrifices her child and herself)

Class VII: The Unique Sacrifice (tribal women had their limbs cut off - a massacre of 363 people from that village by the King)

Class VI: Panna Dhai (who prefers to kill her own child to save the king's son)

भाषा और विचार साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएं हैं। सूचना आधारित सवालों वाले रूखे-सूखे और एक पक्षीय आख्यान (पाठ) उन्हें विचारहीन अभ्यासो में तब्दील कर देते हैं और उनसे भाषाई व संज्ञानात्मक, दोनों में से किसी तरह का लक्ष्य पूरा नहीं होता है। भारत जैसे विविधता पूर्ण लोकतांत्रित देश में निर्देशात्मक पाठ्यपुस्तकें लिखने का कोई मतलब नहीं है। शहरों में राज्य-बोर्डों से संबद्ध स्कूल हैसित के हिसाब से काफी नीचले पायदान पर होते हैं फिर भी छात्रों के बीच संस्कृति, भाषा व सामाजिक मान्यताओं के हिसाब से काफी विविधता होती है। पाठ्यपुस्तकों में उनके मूल्य, संस्कृति व समाज को प्रतिनिधित्व मिलना ही चाहिए। जब पाठ्यपुस्तकों की भाषा बच्चों के वातावरण से बहुत परायापन बरतती है तो वह उन्हें ऐसी संस्कृति में धकेल देती है जो उनको व उनके पूर्व ज्ञान को शामिल नहीं कर रही होती है। ऐसे में वे बिना मस्तूल या पतवार के एक अशांत समुद्र में गोता लगा रहे होते हैं। यह बात ना तो दुनिया को लेकर उनकी सक्रिय समझ में कोई विश्वास पैदा कर रही होती है ना ही उनकी संस्कृति में। यह केवल और केवल उन्हें स्कूल से विमुख करने का काम कर रही होती।

केवल अभ्यास पर टिके और निरर्थक वर्णों से शुरुआत करने वाले पाठ्यक्रय चाहे कितनी भी अच्छी मंशा से बनाए गए हो वे बच्चों को स्कूल में टिकाए रखने में असफल ही हुए हैं। इस संदर्भ में केवल वे ही बच्चे अपवाद होते हैं जिनके पास पहले से भाषा की एक सांस्कृतिक निधि मौजूद होती है और जो मानक भाषा व उसके मानदंडों से परिचित होते हैं। यह कितनी ही बार सिद्ध हो चुका है कि मूल्यों को कथा या आख्यान दोहरा-दोहरा कर नहीं सीखा जा सकता बल्कि इसके लिए सोच में बदलाव लाना होता है और इसे चर्चा करने, सवाल उठाने व आलोचनात्मक चिंतन करने के मौके बनाकर ही किया जा सकता है! हम बराबरी के मौकों की उम्मीद कैसे कर सकते हैं अगर पाठ्यपुस्तकें उस बच्चे की ही अवहेलना कर रही हों जिसके लिए उन्हें लिखा गया है! ◆

(इस लेख को अंतिम रूप देने में गुरुबचन सिंह व पल्लवी चतुर्वेदी द्वारा दिए गए सुझाव महत्वपूर्ण रहे हैं।)

भाषान्तर : प्रमोद

संदर्भ

NCF 2005 : http://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/english/nf2005.pdf
- Position Paper National Focus Group on Teaching of Indian Languages. New Delhi: NCERT, 2006.
- Position Paper National Focus Group Teaching of English. New Delhi: NCERT, 2005.
- Samajh ka Madyam. New Delhi: NCERT, 2009. Hindi.

लेखिका परिचयः अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ कंटीन्यूइंग एज्यूकेशन एण्ड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर में सहायक प्रोफेसर तथा अकादमिक व शिक्षणशास्त्र की विशेषज्ञ हैं। वे अंग्रेजी के शिक्षक प्रशिक्षकों की एक टीम का नेतृत्व भी करती हैं। इससे पहले वे भारत व नेपाल में केन्द्रीय विद्यालय में अंग्रेजी शिक्षण कर चुकी हैं।